ये हवाएँ भी बड़ी मुश्तज़िर है,
तुम्हारे फेरे जुल्फों से भी कदा कर लेती है,
न बेपनाही का मुक़र्रर किया करती है,
बस तेरे हुस्न के साये में वज़ू किया करती है।